Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

पौराणिक कथाओं से संबंधित शिव की संहार प्रतिमाएँ : एक अध्ययन

डॉ. प्रदीप सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग
टी.डी.पी.जी. कॉलेज, जौनपुर

हिन्दू धर्म के प्रमुख देवताओं में शिव को संहारक के रूप में स्वीकार किया गया है। शैव अनुयायी उन्हें सृष्टिकर्ता भी मानते हैं। वे उन्हें सर्वोच्च देवता के रूप में स्वीकार करते हैं। शिव का व्यक्तित्व बहुपक्षीय है। एक ओर वे अपने भक्तों के लिए अत्यन्त कृपालु और अनुग्रहदाता हैं तो दूसरी ओर स्मृति के विनाश हेतु ताण्डव नृत्यकर्ता भी हैं। शिव को संगीत, नृत्य और योग का प्रणेता माना गया है।

शिव की प्रतिमाओं को दो रूपों में विभक्त किया गया है –

1. सौम्य रूप प्रतिमा
2. घोर, उग्र या संहार रूप प्रतिमा

पुनः इन्हें पौराणिक कथाओं से असंबद्ध और संबंधित दो भागों में विभाजित किया गया है। शिव के घोर या संहार रूप से संबंधित जितनी भी प्रतिमाएँ हैं, वे किसी न किसी पौराणिक कथा से संबंधित हैं। केवल भैरव प्रतिमा ही ऐसी प्रतिमा है जिसका संबंध किसी कथा से नहीं है।

1. भैरव प्रतिमा

भैरव शिव के एक विशिष्ट वर्ग का नाम है। शैवागमों में 64 प्रकार के भैरवों का उल्लेख किया गया है, जिनका विभाजन आठ वर्गों में हुआ है। इनमें से प्रत्येक के साथ एक-एक योगिनी संबंधित होती है।

शिव के भैरव रूप की प्रतिमाएँ सामान्यतः उत्तर भारत से प्राप्त होती हैं, जो नग्न, भयानक मुद्रा में, हाथ में तलवार, शूल अथवा कपाल लिए हुए प्रदर्शित हैं। इन प्रतिमाओं को 'वटुक भैरव' की संज्ञा दी गई है।

रूपमण्डन के अनुसार शिव की भैरव प्रतिमा में आठ हाथ प्रदर्शित होने चाहिए। उनके हाथों में तलवार, पाश, शूल, डमरू, कपाल और सर्प प्रदर्शित होना चाहिए तथा एक हाथ अभय मुद्रा में होना चाहिए।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार इस प्रतिमा का पेट निकला हुआ होना चाहिए। आँखें गोल और पीली हों, देवता के दाँत बाहर निकले हों तथा उसे कपालमाला और सर्पाभूषणों से सुसज्जित होना चाहिए। उनके शरीर का रंग जल से भरे हुए मेघ के सदृश होता है और वे गजचर्म धारण किए रहते हैं। उनकी समस्त भुजाएँ आयुधों से विभूषित होती हैं। नख तीक्ष्ण होते हैं और वे सर्प से पार्श्व में स्थित पार्वती को भयभीत करते हुए प्रदर्शित किए जाते हैं।

बंगाल से प्राप्त एक भैरव की प्रतिमा आशुतोष संग्रहालय में सुरक्षित है, जिसमें भैरव की अनेक भुजाएँ प्रदर्शित की गई हैं। इसी प्रकार इंडियन म्यूज़ियम में संग्रहीत शिव की एक भैरव प्रतिमा का उल्लेख राव महोदय ने किया है। डॉ. उपेन्द्र ठाकुर ने बिहार राज्य के दरभंगा जिले के बलिया नामक ग्राम से प्राप्त बारहवीं शती की काले पत्थर की निर्मित एक विलक्षण वटुक भैरव प्रतिमा का उल्लेख किया है, जिसका निर्माण प्रतिमा-शास्त्रीय आधार पर नहीं किया गया है।

2. कालारी प्रतिमा

यह प्रतिमा एक पौराणिक कथा से संबंधित है। भृकुण्ड नामक ऋषि को कोई पुत्र नहीं था। पुत्र प्राप्ति के लिए उन्होंने शिव की उपासना की। शिव प्रसन्न होकर उनके सामने दो विकल्प रखे – एक योग्य पुत्र या अनेक अयोग्य पुत्र। ऋषि ने एक योग्य पुत्र की कामना की तथा शिव ने उन्हें एक योग्य पुत्र का वरदान दिया, किन्तु उसकी आयु मात्र 16 वर्ष थी।

जब बालक की आयु 16 वर्ष होने को हुई, तो उसे अपनी भावी मृत्यु का बोध हुआ। वह तीर्थ यात्रा पर निकल पड़ा और त्रिकोडूर में शिवलिंग की पूजा करने लगा। उसी समय उसकी आयु 16 वर्ष पूर्ण हुई। स्वयं यमराज उसकी आत्मा लेने आए। उसी समय शिव प्रकट हुए और यमराज पर पैर से प्रहार किया तथा अपने भक्त को यह वरदान दिया कि उसकी आयु सदैव 16 वर्ष की ही रहेगी।

इस कथा के आधार पर निर्मित प्रतिमा में शिव का दाहिना पैर भूमि पर और बायाँ पैर सामने यम की छाती तक उठा हुआ होना चाहिए। यम के दो हाथ और दो दाँत प्रदर्शित किए जाते हैं। यम के हाथों में पाश बंधन होना चाहिए तथा यम का शरीर भयभीत रूप में प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

एलोरा की गुफाओं और कैलाशनाथ मंदिर में इस प्रतिमा के उदाहरण प्राप्त होते हैं। चट्टोपाध्याय महोदय ने तंजौर के वृहदीश्वर मंदिर की कालारी प्रतिमा का उल्लेख किया है, जो शैवागमों के विवरण के आधार पर निर्मित की गई है।

3. कामांतक प्रतिमा

शिव द्वारा कामदेव के भस्म किए जाने की कथा के आधार पर जो प्रतिमा निर्मित की जाती है, उसे कामांतक प्रतिमा कहते हैं। इस प्रतिमा का उल्लेख अनेक शैवागमों में हुआ है।

प्रतिमा-शास्त्रीय विधान के अनुसार इसमें शिव पद्मासन लगाकर बैठे होते हैं। उनका बायाँ हाथ योगमुद्रा में गोद में रखा हुआ प्रदर्शित किया जाता है। उनके ललाट पर स्थित तीसरे नेत्र से निकलती हुई ज्वालाएँ दिखाई जाती हैं।

इस प्रतिमा में शिव के सामने कामदेव को भूमि पर गिरा हुआ तथा कामदेव के साथ उसकी पत्नी रति का भी प्रदर्शन होना चाहिए।

गंगैकोंडचोलपुरम् मंदिर में स्थित शिव की कामांतक प्रतिमा का उल्लेख जितेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने किया है। इस प्रतिमा में संपूर्ण कथानक को तीन भागों में उत्कीर्ण किया गया है। मध्य भाग में ध्यानमग्न शिव योगासन मुद्रा में प्रदर्शित हैं। उनके बाएँ पार्श्व में कामदेव तथा भयभीत रति हैं। शिव के दाहिनी ओर पार्वती तथा उनके गण अंजलिबद्ध मुद्रा में प्रदर्शित हैं। शिव का तीसरा नेत्र कुछ खुला हुआ है जिससे प्रतीत होता है कि शिव अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से काम को भस्म कर देने को उद्यत हैं।

(शेष सम्पूर्ण भाग — गजासुर संहार, त्रिपुरांतक, शरभेश, अंधकासुर वध, ब्रह्मशिरोच्छेदक, वीरभद्र, जालंधर प्रतिमा तथा संपूर्ण संदर्भ सूची — इसी प्रकार पूर्णतः रूपांतरित है।)

4. गजासुर संहार प्रतिमा

इस प्रतिमा से संबंधित कथा के अनुसार काशी में एक ब्राह्मण कृतिवासेश्वर लिंग की उपासना कर रहा था। उसी समय गज रूप में एक असुर आकर पूजा में विघ्न उत्पन्न करने लगा। तब शिव ने आकर उस गज दैत्य का संहार किया और गजचर्म को अपने शरीर पर धारण कर लिया।

अंशुमद्भेदागम के अनुसार गजासुर संहार प्रतिमा में शिव की चार या आठ भुजाएँ प्रदर्शित की जानी चाहिए। उनका बायाँ हाथ गज के ऊपर तथा दायाँ हाथ ऊपर की ओर उठा हुआ होना चाहिए। गज की पूँछ उनके मस्तक पर होनी चाहिए। गज की आकृति इस प्रकार निर्मित की जानी चाहिए जिससे प्रतिमा के पीछे प्रभामण्डल बन जाए।

एलोरा की गुफा संख्या 14 और 16 में आठवीं शती ईस्वी की दो गजासुर संहार प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हुई हैं। तिरुवालीश्वरम् के वलीश्वर मंदिर में स्थित गजासुर संहार प्रतिमा में अष्टभुजी शिव का बायाँ पैर गज के मस्तक पर रखा हुआ प्रदर्शित किया गया है। अमृतेश्वर (अमृतपुर) की पाषाण प्रतिमा तथा ताम्र निर्मित बलुवर की गजासुर प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय हैं।

5. त्रिपुरांतक प्रतिमा

इस प्रतिमा से संबंधित कथा का विवरण महाभारत, मत्स्य पुराण, भागवत पुराण, हरिवंश पुराण आदि में मिलता है।

तारकासुर नामक दैत्य के तीन पुत्र थे जिन्हें पृथ्वी, पाताल और आकाश में एक-एक पुर (दुर्ग) प्राप्त था। उन्हें यह वरदान प्राप्त था कि एक हजार वर्ष बाद ये तीनों पुर एक हो जाएंगे और इनका विनाश एक ही बाण से संभव होगा।

इस वरदान के कारण उन्होंने घोर अत्याचार करना प्रारंभ कर दिया। फलतः देवताओं ने शिव से प्रार्थना की। तब शिव ने वेद को धनुष के रूप में, सूर्य को प्रत्यंचा के रूप में, ब्रह्मा को सारथी के रूप में, विष्णु को बाण के रूप में तथा अग्नि को बाण के फल के रूप में धारण किया। शिव ने इन सबके संयुक्त प्रयास से त्रिपुर और उन असुरों का विनाश किया।

प्रतिमा-शास्त्रीय विधान के अनुसार त्रिपुरांतक प्रतिमा रक्तवर्ण की तथा त्रिनेत्र वाली होती है। उनके बाएँ पार्श्व में देवी को स्थित प्रदर्शित किया जाता है। अपराजितपृच्छा में त्रिपुरांतक रूप में शिव को दशभुज बताया गया है। वे अपने अधोभाग में व्याघ्रचर्म तथा ऊपरी भाग में मृगचर्म धारण किए रहते हैं।

गोविंदनाथ राव ने एलोरा और दशावतार मंदिर में स्थित त्रिपुरांतक प्रतिमा का उल्लेख किया है। दशावतार मंदिर में स्थित प्रतिमा में शिव को रथ पर आरूढ़ दशभुज रूप में प्रदर्शित किया गया है। कैलाश मंदिर में प्राप्त त्रिपुरांतक प्रतिमा में शिव के केवल दो हाथ प्रदर्शित किए गए हैं।

6. शरभेश प्रतिमा

इस प्रतिमा से संबंधित कथा के अनुसार हिरण्यकशिपु के वध के लिए विष्णु ने नरसिंह अवतार धारण किया। किंतु हिरण्यकशिपु के वध के बाद नरसिंह का रौद्र रूप पूर्ववत बना रहा जिससे समस्त विश्व में खलबली मच गई। इससे मुक्ति पाने के लिए लोग शिव के पास गए।

शिव ने 'शरभ' का रूप धारण किया जिसमें उनकी आकृति सिंह के समान थी। उनके दो मुख और दो पंख थे। उन्होंने आक्रमण कर नरसिंह को परास्त किया और उसकी खाल अपने शरीर पर धारण कर उसके मस्तक को गले में पहन लिया।

कामिकागम के अनुसार इस प्रतिमा में कमर के ऊपर का भाग मानव जैसा तथा मस्तक भाग सिंह के समान होना चाहिए। आठ पैर, दो पंख और दो निकले हुए दाँत दर्शाए जाने चाहिए। श्री तत्त्वनिधि में शरभ के बत्तीस हाथों का वर्णन किया गया है जो आयुधों से युक्त होते हैं।

चट्टोपाध्याय महोदय ने शरभेश प्रतिमा का उल्लेख किया है जिसमें शरभ द्वारा नरसिंह को फाड़ने का दृश्य प्रदर्शित किया गया है। तंजौर जिले के त्रिभुवनम् के शिव मंदिर में स्थित ताम्र निर्मित शरभेश प्रतिमा भी दृष्टव्य है।

7. अंधकासुर वध प्रतिमा

अंधकासुर वध प्रतिमा के निर्माण का आधार एक पौराणिक कथा है। हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु नामक दोनों दैत्यों के वध के पश्चात हिरण्यकशिपु के पुत्र प्रह्लाद ने पिता के राज्य का त्याग कर विष्णुभक्ति में लीन हो गए। प्रह्लाद के बाद अंधकासुर का असुर राज्य प्रारंभ हुआ।

उसने अपनी तपस्या से ब्रह्मा को प्रसन्न कर अनेक वरदान प्राप्त किए और समस्त लोकों को पीड़ित करने लगा। इंद्र आदि देवता पीड़ित होकर शिव के पास पहुँचे। उसी समय अंधकासुर पार्वती को ले जाने हेतु आ पहुँचा।

तुरंत ही शिव ने उससे युद्ध करने के लिए वासुकि, धनंजय तथा तक्षक नामक नागों की रचना की। उसी समय नील नामक असुर गजरूप में शिव वध के लिए पहुँचा, किंतु वीरभद्र ने नीलासुर का वध कर उसका चर्म शिव को प्रदान किया।

उस चर्म को धारण कर तथा वासुकि, तक्षक और धनंजय नामक नागों से अलंकृत त्रिशूल को हाथ में लेकर शिव ने अंधकासुर के वध के लिए प्रस्थान किया। अंधकासुर ने माया शक्ति से अनेक अंधकासुर उत्पन्न कर दिए। उसके शरीर से गिरने वाली प्रत्येक रक्त-बूँद से एक नया असुर उत्पन्न हो जाता था।

तब शिव ने मूल अंधकासुर के वक्ष में त्रिशूल मारा और उसके रक्त को पृथ्वी पर गिरने से रोकने के लिए अपने मुख से निकली ज्वाला से योगेश्वरी शक्ति की सृष्टि की जो रक्त को तुरंत पी जाती थी। अन्य देवताओं ने भी अपनी-अपनी शक्तियों की रचना कर युद्ध में सहयोग दिया।

इस कथा के आधार पर निर्मित प्रतिमा में शिव के आठ हाथ दर्शाए जाते हैं। उनके हाथों में त्रिशूल होना चाहिए जिससे वे अंधकासुर पर प्रहार करते हुए प्रदर्शित हों। भूमि पर खड़ी योगेश्वरी देवी के हाथ में पात्र होना चाहिए जिसमें अंधकासुर का रक्त गिर रहा हो।

एलिफेंटा और एलोरा की गुफाओं में अंधकासुर वध प्रतिमा का सुंदर चित्रण किया गया है।

8. ब्रह्मशिरोच्छेदक प्रतिमा

इस प्रतिमा से संबंधित कथा का विवरण पुराणों में मिलता है। वराह पुराण के अनुसार प्रारंभ में ब्रह्मा के पाँच सिर थे। रुद्र को उत्पन्न करने के बाद ब्रह्मा ने उनका नाम 'कपाली' रखा। फलतः रुद्र ने क्रोधित होकर ब्रह्मा का एक सिर काट डाला, किंतु वह सिर रुद्र के हाथ में ही चिपका रह गया।

ब्रह्मा ने उन्हें शाप दिया कि यह सिर बारह वर्ष तक तुम्हारे हाथ में चिपका रहेगा और बारह वर्ष बाद वाराणसी में इस कपाल से मुक्ति मिलेगी। तत्पश्चात शिव बारह वर्ष तक तीर्थयात्रा करते हुए वाराणसी पहुँचे, जहाँ कपाल मोचन हुआ।

श्री तत्त्वनिधि में इस पौराणिक कथा के आधार पर निर्मित की जाने वाली प्रतिमा के संबंध में बताया गया है कि इसमें शिव के तीन नेत्र और चार भुजाएँ होनी चाहिए। वे जटामुकुट और वक्रकुण्डल धारण किए हुए हों। उनके दाहिने हाथ में परशु और वज्र तथा बाएँ हाथ में ब्रह्मा का सिर और त्रिशूल प्रदर्शित होना चाहिए।

आठवीं शती ईस्वी के कांचीपुरम् के कैलाश मंदिर की ब्रह्मशिरोच्छेदक प्रतिमा में शिव अपने हाथ में ब्रह्मा के कटे हुए पाँचवें सिर को लिए हुए अत्यंत कलात्मक ढंग से प्रदर्शित किए गए हैं।

9. वीरभद्र प्रतिमा

दक्ष प्रजापति के यज्ञ विध्वंस करने वाले शिव रूप का नाम वीरभद्र है। इस यज्ञ विध्वंस की कथा का वर्णन कूर्म पुराण, वराह पुराण, भागवत पुराण तथा शिव पुराण में मिलता है।

भागवत पुराण के विवरण के अनुसार शिव के इस रूप में उनकी हजार भुजाएँ थीं, मेघ के समान श्यामवर्ण था, सूर्य के समान जलते हुए तीन नेत्र थे, विकराल दाढ़ें थीं, अग्नि की ज्वालाओं के समान लाल-लाल जटाएँ थीं, गले में नरमुंडों की माला थी और हाथों में तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र थे।

प्रतिमा-शास्त्रीय विधान के अनुसार इस प्रतिमा में शिव को चतुर्भुजी दर्शाया जाता है। उनके तीन नेत्र, बाहर की ओर निकले हुए दाँत उनकी भयंकरता को स्पष्ट करते हैं। उनके बाएँ पार्श्व में रौद्र काली की प्रतिमा तथा दाहिनी ओर यज्ञकर्ता दक्ष की प्रतिमा निर्मित की जाती है।

शिव के इस रूप की ताम्र निर्मित एक प्रतिमा संग्रहालय में सुरक्षित है। साथ ही तेकेशी के मंदिर के मंडप स्तंभ तथा कांचीपुरम् के कैलाशनाथ मंदिर में भी यह प्रतिमा उत्कीर्ण रूप में दृष्टव्य है।

10. जालंधर प्रतिमा

शिव पुराण में जालंधर असुर का वर्णन मिलता है। त्रिपुरासुरों के वध के समय त्रिपुरांतक शिव के मस्तक से जो ज्वाला उत्पन्न हुई, उसे समुद्र में डाला गया। उस ज्वाला और समुद्र के संयोग से उत्पन्न शिशु का नाम जालंधर पड़ा।

जब वह बड़ा हुआ तो उसने कालनेमि की पुत्री वृन्दा से विवाह किया और पृथ्वी पर सर्वशक्तिमान राजा के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उसकी पीड़ा से पीड़ित देवताओं ने षड्यंत्र कर शिव द्वारा उसका वध कराया।

इस रूप की प्रतिमा में दो ही हाथ दिखाए जाते हैं। उनके एक हाथ में छत्र तथा दूसरे में कमंडलु होता है। सिर पर जटाभार तथा मस्तक पर चन्द्रमा प्रदर्शित किया जाता है।

संदर्भ सूची

1. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 59/1/4
2. द डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, पृ. 482
3. एलिमेंट्स ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, खंड 2, भाग 1, पृ. 177
4. ठाकुर, *Some Aspects of Ancient Indian History and Culture*, पृ. 257–59
5. प्रतिमा विज्ञान, पृ. 263

6. द डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, पृ. 487
7. वही, पृ. 488
8. तिवारी, एस.पी., हिन्दू आइकनोग्राफी, चित्र 19–20
9. द चोलाज, पृ. 758
10. प्रतिमा विज्ञान, पृ. 263
11. महाभारत, कर्णपर्व 31/33–34
12. मत्स्य पुराण, अध्याय 129–140
13. भागवत पुराण 5/24/28, 7/10/52–60
14. हरिवंश पुराण, भविष्यपर्व, अध्याय 133
15. अपराजितपृच्छा, पृ. 129
16. एलिमेंट्स ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, खंड 2, भाग 1, पृ. 171
17. वही, पृ. 171
18. द डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, पृ. 488
19. प्रतिमा विज्ञान, पृ. 264
20. वही, पृ. 266
21. शास्त्री, अजयमित्र, त्रिपुरी, पृ. 145
22. ललित कला, 1–2 (1955–56), फलक 37–5
23. रे, ए., पल्लव आर्किटेक्चर, फलक 34
24. भागवत पुराण 4/5/2–3
25. प्रतिमा विज्ञान, पृ. 266
26. रे, ए., पल्लव आर्किटेक्चर, फलक 36, चित्र 1